श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ५

अक्टूबर - .२०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. स्वयं के सुख के लिये ..... केन्द्रिय जीव क्या करेगा इसका कोई भरोसा नहीं ।
२. मर्यादा में रहे हुए ..... पदार्थों को जानना वह अवधिज्ञान हैं ।
३. जिस व्यापार से आत्मा शुभाशुभ कर्मो को ग्रहण करता है वह ..... है ।
४. व्यसनों का ..... कदाचित धर्म करे पर उसका धर्म जीवन में कभी टिक नहीं सकता ।
५. प्रत्येक व्यक्ति महान नहीं बन सकता पर प्रत्येक व्यक्ति ..... जरुर बन सकता है ।
६. जीव दया के सच्चे परिणाम के बगैर जीवन में ..... असंभवित है ।
७. तीन लोक में रहे सभी तीर्थों को और सभी प्रतिमाओं को वंदन ..... सूत्र से किया है ।
८. कष याने ..... आय याने लाभ ।
९. श्री मुनिसुव्रत प्रभु के शासन में आठवें वासुदेव ..... हुए ।
१०. धर्म का ..... बनाना चाहने वाले श्रावकों को जीवन में से दोषों की बादबाकी करनी पडेगी ।
११. कृष्ण और नील ..... वर्ण है जिसकी प्राप्ति पाप से होती है ।
१२. मानवी अपने जीवन को सुयोग्य रीत से बिताये तो अनेकों के लिये ..... के लिये निमित्त बन जाता है ।
१३. परमात्मा का कल्याणक जानकर उसकी अनुमोदना के द्वारा कितनेक नारकी ..... को प्राप्त करते हैं ।
१४. श्री शांतिनाथ प्रभु छठवे भव में महाविदेह में अपराजित नामक ..... हुए ।
१५. वेश्यागमन के व्यसन से जीव ....., निर्माल्य वीर्यहीन बने है ।
१६. पात्रता योग्यता होते हुए भी लाभ न होने दे वह ..... कर्म ।
१७. श्री अरनाथ प्रभु का लांछन ..... है ।
१८. ..... जीवों में चारों चार गति के जीवों का समावेश होता है ।
१९. दान से ही त्याग के ..... वपन होता है ।
२०. चिलाती पुत्र को वृक्ष के नीचे ..... में खडे मुनि के दर्शन हुए ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. नरक के जीव कहाँ उत्पन्न होते है ?
२. अरिहंत की माता पाचवें स्वप्न में क्या देखती है ?
३. बैठे बैठे या खडे खडे नींद करे वह कौन सी निद्रा ?
४. प्रेम और वात्सल्य की मूर्ति कौन ?
५. किस नामकर्म के उदय से जीव को कर्कश स्वर की प्राप्ति होती है ?
६. मल्लिनाथ प्रभु पूर्व भव में किस नगरी के राजा थे ?
७. बगाई, कपिल वगैरह कौन से जीव हैं ?
८. व्यक्ति के ज्ञान तंतुओ को कौन निर्बल बनाते है ?
९. मेघरथ राजा के भाई का क्या नाम था ?
१०. ललितपुर का राजा हमेशा किस में तल्लिन रहता था ?
११. क्षायिक समकित के स्वामी कौन थे ?
१२. खेती, मील वगैरह आरंभ समारंभ से जो क्रिया लगे उसे क्या कहते है ?
१३. नमोत्थुणं सूत्र का दूसरा नाम क्या ?
१४. वामन संस्थान से विपरीत संस्थान कौनसा ?
१५. शील को कौन नमस्कार करता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. संपई २) धुतं ३) ढिंकुण ४) कुखगई ५) पायालि ६) मिच्छतं ७) ताइं ८) विणय ९) पिज्ज
१०. ठाणं ११) नारय १२) दुस्सर १३) अयलं १४) धम्मदेसयाणं १५) मसगा १६) अव्वय
१७. धराणं १८) चाउरंत १९) उवघाय २०) इर्या.

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) सादि	१) दान	६) विश्वसेन	६) लोभ
२) शेला	२) साधुजीवन	७) जगद्गुशा	७) संस्थान
३) परस्त्रीगमन	३) वालुका प्रभा	८) पेथडशा	८) क्रिया
४) सर्वविरती	४) विवेक	९) पर्वत	९) व्यसन
५) कायिकी	५) अचिरादेवी	१०) कषाय	१०)शील का गुण

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. क्रियायें कितनी है ?
२. तमःप्रभा नरक की लंबाई कितनी है ?
३. श्री कुंथुनाथ प्रभु कितने वर्ष चक्रवर्तीपने में रहे ?
४. पाप कितने प्रकार से भोगा जाता है ?
५. आश्रव तत्व के भेद कितने ?
६. श्री नमिनाथ प्रभु के गणधर कितने ?
७. दर्शनावरणीय कर्म के भेद कितने हैं ?
८. श्री अरनाथ प्रभु का छद्मस्थ काल कितने वर्ष का है ?
९. पंचेन्द्रिय के जीवों में कितनी गति के जीवों का समावेश होता है ?
१०. व्यसन कितने है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. दान, शील और विवेक के द्वारा ही लोकप्रियता के शिखर सर कर सकेगें ?
२. क्रुरता, करुणा और मैत्री के परिणाम की घातक है ?
३. तीर्थंकर परमात्मा द्वारा प्ररुपित मार्ग से विपरीत मार्ग में श्रद्धा हो वह मिश्र मोहनीय कर्म ।
४. श्री शांतिनाथ प्रभु सातवें भव में सर्वार्थ सिद्ध में देव हुए ।
५. आभोग याने उपयोग अनाभोग याने उपयोग शुन्य ।
६. दुर्गुणों की बादबाकी और सद्गुणों की सुवास मनुष्य को उच्च स्थान पर बिराजित करती है ।
७. पंचेन्द्रिय जीव ऐसे हैं, जो चार गति और चारों लोक में व्याप्त हैं ।
८. आज तक समुद्र से अधिक शराब में मानवी डूबे हैं ।
९. श्री अरनाथ प्रभु स्वयं छठवे चक्रवर्ती थे ।
१०. स्वयं के हाथों से ही जीवादिक का घात करना वो स्वहस्तिकी क्रिया है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. साहेब, अब कहीं भी चैन नहीं है । आत्मा में सतत शल्य चुभता रहता है ।
२. नदी जिस जिस प्रदेश में से बहती जाती है, उस उस प्रदेश में हरियाली देखने को मिलती है ।
३. काया अति आनंद मुज तुम युगपद स्पर्शे, तो सेवक तार्या विन कहो केम हवे सरशे ।
४. तीखा कडवा रस अशुभ रस है, जिसकी प्राप्ति पाप से होती है ।
५. जैन इतिहास के पन्ने पन्ने पर ऐसे अनेक लोकप्रिय महापुरषों के चरित्र अंकित है ।
६. प्रभु के शासन में दसवे हरिषेण एवं ग्यारहवे जय नामक चक्रवर्ती हुए ।
७. नीम और बबुल बोने वाले को आम कहाँ से मिले ?
८. यह व्यसन पैसों की आसक्ति बढाता है और एक पाप अनेक पापों को जन्म देता है ।
९. इस आने वाले व्यक्ति को गुप्त रिति से मार डालना ।
१०. जिन्होने सात प्रकार के भय को जीता है, उन जिनों को, जिनेश्वरों को नमस्कार हो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. दुर्गुणों की बादबाकी और सद्गुणों की सुवास । २) कोई भी एक व्यसन ३) पाँच निद्रा
४. श्री नमिनाथ प्रभु की च्यवन कल्याणक से मोक्ष कल्याणक तक की जीवन यात्रा ।
५. नमोत्थुणं सूत्र की नवमी तथा दसवीं गाथा का भावार्थ समझाओ ।

शत्रुंजय એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર,
સ્ટેસન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪